HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-IV, (Causes Of The Decline Of Mercantilism)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 85

वाणिज्यवाद के पतन के कारण

(CAUSES OF THE DECLINE OF MERCANTALISM)

1500 - 1776 ई. के काल में वाणिज्यवाद के आर्थिक विचारों का प्राधान्य रहा था। स्वतन्त्र व्यापार के सिद्धान्त की स्थापना इसके पतन का मुख्य कारण थी। इसके साथ ही निर्हस्तक्षेप का सिद्धान्त स्थापित हुआ। इंग्लैण्ड के प्रख्यात अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने इन सिद्धान्तों की स्थापना की थी। सबसे पहले इंग्लैण्ड में इन सिद्धांतों को स्वीकार किया गया। धीरे-धीरे इन सिद्धांतों का प्रभाव स्थापित होने से वाणिज्यवाद का पतन हो गया। वाणिज्यवाद के पतन के कारण निम्नलिखित थे -

(1) एडम स्मिथ के आर्थिक विचार- कम्पनियों द्वारा व्यापारिक एकाधिकार का एडम स्मिथ ने विरोध किया और उन्मुक्त या स्वतन्त्र व्यापार की स्थापना पर बल दिया। व्यापारियों ने इसका व्यापक स्वागत किया। इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की स्थापना हुई। सरकार का नियन्त्रण वाणिज्यवाद में होता था। आर्थिक गतिविधियों को स्वतन्त्र रखने का एडम स्मिथ पक्षपाती था। उसके इन विचारों को व्यापक समर्थन मिला जिससे वाणिज्यवाद का पतन हुआ।

(2) फ्रान्स में क्वेसने के विचार- वाणिज्यवाद का पतन फ्रान्स में भी हुआ। इसे फ्रान्स में कोल्बर्टवाद के नाम से जाना जाता था। सरकारी व्यापारी कम्पनियों का निर्माण करके कोल्बर्ट ने व्यापार तथा औपनिवेशिक नीति को आरम्भ किया। यह नीति असफल हो गई और फ्रान्स में अनेक युद्धों के कारण

जनसाधारण पर करों का भार बढ़ गया। अत: कोल्बर्टवाद का विरोध 18 वीं शताब्दी के आरम्भ से ही होने लगा। नवीन अर्थशास्त्रियों को फीजियोक्रेट कहा जाता था। क्वेसने इनमें प्रमुख विचारक था। कृषि को इन अर्थशास्त्रियों ने अधिक महत्व दिया और कर-प्रणाली में सुधार पर बल दिया। फ्रान्स में भी इन परिस्थितियों में वाणिज्यवाद का प्रभाव कम हो गया।

(3) उद्योग तथा व्यापार का विस्तार- दो शताब्दियों से वाणिज्यवाद का प्रभाव अधिक रहा था। इंग्लैण्ड और फ्रान्स में इस काल में उद्योगों में काफी विकास हो गया था। बैंकिंग प्रणाली तथा अन्य संस्थाओं का व्यापक रूप से निर्माण हो गया था। आर्थिक विकास में अब वाणिज्यवाद बाधक हो रहा था। अत: इसका सामान्य जनता ने भी विरोध किया।

(4) कृषि का पतन - केवल व्यापार को वाणिज्यवाद में महत्व दिया गया था। कृषि पर इसका दुष्प्रभाव पड़ा। कृषि में नया बैंकर क्लास रुचि नहीं रखता था। कृषकों की दशा इससे खराब हुई। कृषकों तथा जनता के सामान्य वर्गों ने स्वतन्त्र व्यापार का समर्थन किया जिससे कृषि को भी विकसित होने का अवसर प्राप्त हो।

(5) उपयोगी वस्तुओं की माँग- वाणिज्यवाद में सोने-चाँदी को एकत्रित करना ध्येय बताया गया था। जनता पर नवीन

आर्थिक विचारों का प्रभाव पड़ा और जनता ने समझ लिया कि सोना और चाँदी साधन थे, साध्य नहीं। इनकी उपयोगिता अत्यन्त सीमित थी। अब जनता उपयोगी वस्तुओं की माँग कर रही थी और विभिन्न देशों के मध्य वस्तुओं का आयात-निर्यात चाहती थी

(6) स्वतन्त्र व्यापार की आवश्यकता- अब आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र का इंग्लैण्ड और फ्रान्स की जनता विस्तार चाहती थी। जिसमें भाग लेने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को हो। इस समय हो रहे नवीन आविष्कारों ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। स्वतंत्र व्यापार को औद्योगिक क्रांति ने आवश्यक बना दिया और वाणिज्यवाद जिसमें प्रतिबंधित एकाधिकार होता था समाप्त हो गया।

इस प्रकार वाणिज्यवाद का पतन हो गया।

धन्यवाद